नौवाँ अध्याय
शिरडी के धन्वंतरि

देखा गया है कि प्राय: प्रत्येक मनुष्य को विपत्ति के समय परमेश्वर का स्मरण होता हैं। आनन्द और सुख के समय मे मनुष्य की आँखे सम्पत्ति के नशे से अंधी हुई रहती है। उसके आचरण में विवेक की कमी आ जाती है। साधु-संत तो अपने बहुमुल्य समय का अपव्यय करने वाले फक्कड लोग होतें है, ऐसा सोचकर बहुत से लोग जहाँ तक सम्भव हो, उनसे दूर ही रहने की चेष्टा करते है। पंरतु जब आपत्तियों के पहाड टूट पडते है, भयानक एवं असह्य रोगों से शरीर पीडित हो जाता है, तब परमात्मा का स्मरण होता है,और साधु-संतो के चरण स्पर्श की प्रबल कामना उत्पन्न होती है। संसार के प्रति विरक्ति उत्पन्न होने कारण संत-समागम के प्रेमी अथवा परमात्मा मे अनन्य भक्ति रखने वाले जन बहुत थोडे होते है। श्री साई महाराज का किर्ति-परिमल जैसे जैसे फैलता गया, वैसे-वैसे ही दूर दूर के लोग उनके दर्शनार्थ आने लगे। उनमें से अधिकांश लोग तो रोगों से ग्रस्त हुए श्री बाबा की कृपा से रोग-मुक्त होने की भावना से आते थे। श्री साई का औषधि सम्बन्धी ज्ञान परमोच्च कोटि का था। वे इस भूतल पर मानो मनुष्य-रूप में दूसरे धन्वंतरी ही थे। सहस्त्रों मनुष्यों का श्री साई बाबा द्वारा रोग दूर कराने का प्रत्यक्ष अनुभव था। श्री साई महाराज को आयुर्वेद तथा भिन्न भिन्न वनस्पितियों, भस्मों आदि का अच्छा-खासा ज्ञान था, यह प्रत्यक्ष प्रमाण से भी सिद्ध हो गया था। शिरडी मे आने के पश्चात् उन्होंने पहले तो यूनानी-पद्धति के अनुसार औषधि-उपचार करने की प्रथा आरम्भ की। यदि गाँव का कोई मनुष्य रोग ग्रस्त होता तो श्री बाबा स्वयं ही उसके घर जाकर उचित औषधि की व्यवस्था

कर देते और उपचार करते थे। वे स्वत: परिश्रम कर रोगी की शुश्रूषा भी किया करते थे। जिन्होनें इस प्रकार की घटनाएँ स्वयं अपनी आँखो से देखी है, ऐसे कुछ वयोवृद्ध लोग आज भी गाँव में हैं। नि:स्वार्थी भाव से नि:शुल्क औषधि देने तथा उपचार सुश्रुषा के कार्य से श्री बाबा का नाम अडोस -पडोस के गाँवो मे भी फैल गया और लोगो के झुंड के झुंड शिरडी आने लगे। श्री साई महाराज की औषधियाँ भी भिन्न भिन्न प्रकार की तथा विलक्षण होती थी। उनके रोगग्रस्त भक्तों का अनुभव भी यदि किसी ने संकलित करने का प्रयास किया तो निश्चय ही एक ऐसा आश्चर्यजनक बृहद् ग्रंथ तैयार हो सकेगा, जिससे श्री साई बाबा की प्रचंड बुद्धिमत्ता का अनुमान लगाया जा सके। किंतु, यहाँ भक्तों के विविध अनुभवों मे से कुछ चुने हुए अनुभवों का ही वर्णन करना समीचीन होगा।

श्री साई महाराज के लक्ष्मणराव उर्फ तात्या साहेब नूलकर नामक एक भक्त पंढरपुर मे मुंसिफ थे। उनकी आँखो मे कोई भयानक रोग हो गया था। दृष्टि में विकृति उत्पन्न हो गई और असह्य वेदना से वे तडपने लगे। अनेक सुविख्यात नेत्र-वैद्यो से उन्होनें औषधियाँ ली। पर, कोई भी अनुकूल सिद्ध न हुई। अंत मे निराश होकर, अंतिम उपाय के तौर पर वे गुरू-पोर्णिमा के दिन शिरडी पहूँचे। दो दिन तक आँखो पर पट्टी बाँधे और श्री साई महाराज के नाम का जप करते हुए वे वही पडे रहे। दूसरे दिन माधवराव को बुलाकर,अपनी आँखो पर हाथ रखते हुए श्री साई महाराज बोले-''शामा, आज मेरी आँखों मे बडी पीडा हो रही है।'' श्री साई के मुख से ये शब्द निकलने के पश्चात् नूलकर जी की आँखे, अपने आप ही धीरे-धीरे ठीक होती गई और कुछ ही दिनों के बाद बिना किसी उपचार के उनका नेत्र रोग पूर्णत: जाता रहा। क्या श्री साई महाराज का यह चमत्कार मन को चकित करने वाला नही है? स्पष्ट है, जब भक्त के लिये वेदना असह्य हुई तो श्री साई महाराज ने स्वयं ही उस रोग से पीडित हो, भक्त को आराम पहूँचाया।

शिरडी ग्राम मे उस समय कोई अच्छा डॉक्टर नही था। एक बार श्री साई के पास एक रोगी आया। उसकी आँखे लाल हो रही थी और उनमे सूजन भी आ गई थी। श्री बाबा ने उसे देखते ही पत्थर से भिलावाँ पीस कर उसकी दो गोलियाँ बनाई और रोगी की आँखो पर दोनों गोलियाँ रख कर ऊपर से कस कर कपडे की पट्टी बाँध दी। कुछ समय बीतने पर उसकी पट्टी खोल दी गई और आँखो पर निरंतर जल छिडकना आरम्भ किया। चमत्कार यह हुआ कि आँखो की सूजन पूर्णत: नष्ट हो गई और वे पूर्ववत् बिल्कूल निर्मल हो गई। इस प्रकार श्री साई का उपचार बडा विलक्षण होता था। आँखो जैसे शरीर के कोमलांग के लिए भिलावाँ का साहसिक प्रयोग सत्पुरूष श्री साई महाराज के सिवाय अन्य कोई हकीम नही कर सकता। श्री साई की औषधि योजना केवल भक्तों के मन का समाधान करने के लिये निमित्त मात्र ही होती थी। श्री साई महाराज के मुख पर सदैव दीप्तिमान रहने वाले तेज और उनकी वाणी का ऐसा विलक्षण प्रभाव होता था, कि उनके सामर्थ्य का सही आकलन करना मानवीय मन की बात थी।

आलन्दी के पद्मनाथ स्वामी ने भी पत्र द्वारा निजी अनुभव प्रकाशित किय है। एक बार कान में कोई ऐसा विकार उत्पन्न हुआ, जिससे उन्हे असह्य वेदना हुई। बम्बई के तत्कालीन सुप्रसिद्ध डॉक्टर अंडरवूड ने कान मे शल्य-क्रिया की आवश्यकता बतलायी। संयोग से श्री साई की कीर्ति सुनकर उसी समय पद्मनाभ स्वामी उनक दर्शनार्थ शिरडी आये। ''प्रारब्धकर्मणां भोगादेव क्षय:'' इस श्रुति वाक्य में पूर्ण विश्वास रखते हुए स्वामी जी ने अपने रोग के संबंध मे श्री साई महाराज से बात करने में सकोंच अनुभव किया। किन्तु, समीप ही खडे माधवराव ने स्वामीजी के रोग-ग्रस्त होने की बात श्री बाबा से कह दी। उसी समय ''अल्ला अच्छा करेगा।'' ये स्नेह भरे शब्द श्री साई के मुख से निकले और उसी क्षण पद्मनाभ स्वामी जी के कान की व्यथा पूर्ण रूप से नष्ट हो गई। जब वे बम्बई लौटे तो वहाँ के सुप्रसिद्ध डॉक्टरों ने भी इस बात

पर आश्चर्य प्रकट किया कि औषधि के बिना ही रोग कैसे नष्ट हो गया!

किसी को जब कोई व्यथा होती तो उपचार के तौर पर श्री साई महाराज जो उपाय करते थे, वह इतना निराला होता था कि देखना वाले की मति कुण्ठित हो जाती थी और वह अवाक् खडा रह जाता था। बालाभाऊ गणपत शिंपी मलेरिया से पीडित था। हर प्रकार की चिकित्सा की गई। डॉक्टरों की औषधियाँ और वैद्यो की भस्म व चूर्णो का प्रयोग किया गया; परंतु मलेरिया किसी प्रकार भी न टूटा। प्रत्येक दिन नियत समय पर बुखार आ जाता था। अंत में निराश हो बालाभाऊ शिरडी आया और अनन्य भाव से श्री साई के चरणो के शरण ली। श्री बाबा ने दयालु अंत:करण से एक बहुत ही विस्मयजनक उपाय बताया। उन्होनें कहा-''श्री लक्ष्मी के मंदिर के निकट एक पत्ते में दही भात रख एक काले कुत्ते को खिला दो।'' पहले तो बालाभाऊ असमंजस में पड गया; पर, घर जाकर देखा तो दही-चावल तैयार ही था। उसमे से थोडा दही-चावल लेकर बालाभाऊ तत्परता से मंदिर कि ओर चल पडा। चमत्कार यह हुआ कि उसी समय मंदिर के निकट पहले कभी भी न दिखाई देने वाला एक काला कुत्ता पूँछ हिलाता हुआ बालाभाऊ के लाये हुये भोजन की मानो प्रतिक्षा ही कर रहा था। देखते-देखते ही उस काले कुत्ते ने तुरन्त हाथ मे रखे हुए पत्ते की ओर लपककर सारा दही भात चट कर लिया। श्री साई महाराज का बालाभाऊ के लिये किया हुआ यह प्रयोग सफल हुआ और बालाभाऊ का मलेरिया, जिससे वह बहुत दिनों से परेशान था, पूर्णत: नष्ट हो गया। श्री साई की यह लीलाएँ कितनी अवर्णनीय और विस्मयकारी होती थी ?

श्री साई की निजी इच्छा-शक्ति भी पूर्ण अवस्था में पहूँची हुई थी; क्योंकि कुछ असाध्य रोग तो उन्होंने केवल अपनी तीक्ष्ण दृष्टि की एकाग्रता से दूर कर दिए थे। एक बार श्रीमान् बापूसाहेब बूटी अतिसार से पीडित हुए और उन्हे लगातार उल्टियाँ आनी भी आरम्भ हुई। बापूसाहब के पास औषधियों

का बहुमुल्य संग्रह था; परंतु समय पर एक भी औषधि काम नही आई। बापूसाहब धैर्य खो बैठे और दुर्बलता बढने से उनका उठना-बैठना भी बन्द हो गया। जब अपने नित्य-नियम के अनुसार श्री बाबा के दर्शन के लिये जाना भी असंम्भव हो गया तो श्री बाबा ने स्वयं ही उन्हे कहला भेजा कि वह जिस अवस्था में भी हों, वैसे ही तुरंत मेरे पास आ जाये। श्री बाबा की आज्ञानुसार बापूसाहब बडी कठिनाई से द्वारकामाई आये और श्री बाबा की सम्मुख बैठ गए। उनकी ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए श्री बाबा बोले-''सावधान! हिलो मत। अब तुम्हे दस्त नही होंगे।'' श्रीबाबा की वाणी के दिव्य सामर्थ्य के कारण कहिये या मंत्र सामर्थ्य के कारण कहिये, उसी क्षण से बापूसाहब के स्वास्थ्य मे सुधार होना आरम्भ हो गया। पर कुछ दिनों के पश्चात् यही बापूसाहब पुन: हैजे के शिकार हुए। प्यासके मारे उनका गला सूख गया। डॉ. पिल्ले ने रोग को वश मे लाने का भरसक प्रयत्न किया; पर किसी प्रकार का लाभ न हुआ। उधर बापूसाहब ने श्री बाबा के पास जाने का हठ किया। अंत में उन्हे वैसे ही उठाकर श्री बाबा के सामने लाया गया। श्री बाबा ने उसके स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे पूरी जानकारी प्राप्त की और उन्हे बादाम-पिश्तों की गाढी खीर पीने का परामर्श दिया। बापूसाहब ने उनकी आज्ञा का पालन किया और उन्हे पूर्ण आराम पहूँचा। अब यदि कोई डॉक्टर हैजे के रोगी को बादाम-पिश्ते जैसी गरिष्ठ वस्तुएँ खाने के लिए कह दे तो लोग अवश्य ही उसकी गणना पागलों मे करेंगे। किन्तु, श्री बाबा की लीलाएँ तो ऐसी ही अद्‌भुत होती थी।

जब श्री बाबा के परम भक्त काका महाजनी आँव जैसे भयानक रोग से ग्रस्त हुए तो श्री बाबा ने उन्हे कच्ची मुँगफल्ली के दाने खाने के लिए दिया था। तात्पर्य यह है कि किसी भी रोग के लिए श्री बाबा, जो उनके मन मे आता था, वही औषधि उपचार करते थे। यद्यपि उनकी बताई हुई वस्तुओं में रोग

नष्ट करने का सामर्थ्य प्रत्यक्षत: दिखाई नही देता था , तथापि श्री बाबा के सान्निध्य में सदैव वास करने वाली ऋद्धिसिद्धियाँ उनकी आज्ञानुसार सेवा करने के लिए तत्पर रहती थी और अलौकिक चमत्कार उत्पन्न करती थी।

शिरडी के माधवराव देशपांडे जब बवासीर से ग्रस्त हुए तो श्री बाबा ने उन्हें सोनामुखी का काढा बना कर दे दिया। माधवराव का रोग तुरंत ही नष्ट हो गया; परंतु कुछ दिनो के बाद जब माधवराव दुबारा बवासीरसे पीडित हुए तो उन्होनें श्री बाबा से पूछे बिना सोनामुखी के काढे का प्रयोग किया। पंरतु, कोई लाभ न होकर रोग ने अधिक भयानक रूप धारण कर लिया। सच बात तो यह है, कि सोनामुखी का काढा बवासीर के लिए कोई औषधि नही थी, यह तो श्री बाबा के हाथों तथा उनकी कृपा-दृष्टि में ही रोगों को दूर करने का अलौकिक सामर्थ्य था।

अनेक बार तो भक्तो की श्री साई महाराज में मनोमय श्रद्धा ही उपयोगी सिद्ध होती थी। श्री बाबा ने प्रत्यक्ष पैर तले की मिट्टी भी उठा कर दी तो वह भी सुवर्ण भस्म में रूपान्तरित होकर अचूक गुणवाली सिद्ध होती थी। साँप या वृश्चिक के काटने से विष चढे हुए अनेक भक्तों को श्री बाबा ने केवल मंत्रबल से या मिट्टी के फूँक से ठीक करके दिखाया। किसी पहूँचे हुए जादूगर की तरह ही ऐसे अवसरों पर श्री बाबा भी विस्मयजनक प्रयोग करके दिखाते थे और भक्तों की पीडाएँ दूर करते थे। एक भक्त को स्वप्न में दृष्टान्त देकरऔषधि योजना बतलाने की घटना तो बहुत ध्यान देने योग्य है। बेलापूर के समीप तुर्भे ग्राम में रहनेवाली शांताबाई नाम की एक स्त्री लगभग सात-आठ वष से व्याधिग्रस्त थी। उसके बाये हाथ के अँगूठे की हड्डी में कोई रोग हो गया था। वह रोग दूर होना असम्भव प्रतीत होता था। उसने श्री बाबा की मनोभाव से आराधना की। तब श्री बाबा ने प्रसन्न हो एक दिन स्वप्न में दृष्टान्त दिया और एक विशिष्ट औषधि का उपयोग करने का परामर्श दिया। शांताबाई ने श्री बाबा की बतलाई हुई औषधि का प्रयोग करना आरम्भ किया

और कुछ ही दिनों बाद उसका रोग सम्पूर्णत: नष्ट हुआ। शांताबाई ने अपने हाथ से दिनांक १ सितम्बर, १९१८ को श्री बाबा को एक पत्र लिखा, जिसमें श्री बाबा को प्रणाम भेजते हुए उन्हे अनेक धन्यवाद दिए।

इसी तरह श्री बाबा के परम भक्त नानासाहेब चाँदोरकर को एक बार जब उदर पीडा हुई तो श्री बाबा ने उन्हे बर्फी घी में भून कर खाने के लिए कहा। ऐसा करने से नानासाहेब की उदरपीडा तुरंत ही दूर हो गई। इस प्रकार प्रारम्भ में कई वर्ष श्री बाबा ने जन-सेवा का व्रत स्वीकार किया था। शिरडी में श्री बाबा के दर्शन की कामना तथा उनके हाथ का प्रसाद ग्रहण करने के उद्देश्य से भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग वहाँ आते रहते थे। उनमें से बहुत से तो अंधे और लूले लँगडे लोग होते थे। बिल्कुल असाध्य तथा घृणास्पद रोगोंसे पीडित रोगियों से भी श्री बाबा स्नेह तथा अपनत्व की भावना से व्यवहार करते थे। रक्त-पित्त से ग्रस्त लोग भी श्री बाबा की सेवा के लिए उपस्थित रहा करते थे। श्री बाबा किसी भी रोगी का अपमान नही करते थे। अपने दैवी सामर्थ्य तथा औषधियों से, जहाँ तक सम्भव होता, वे सदैव उन्हे रोग मुक्त करने मे ही प्रयत्नशील रहते थे। कुष्ठ रोग स पीडित भागोजी तो कई वर्षो तक श्री बाबा की सेवा चाकरी करता रहा। संसार ताप से पीडित आबालवृद्ध की सहायता करना और वह भी बिना मूल्य, यही श्री बाबा का आरम्भ से निश्चित किया हुआ जीवनध्येय था। उस काल में श्री बाबा ने असंख्य लोगों को उपकृत किया और आज भी श्रद्धालु भक्तों को श्री बाबा की सहृदयता का प्रमाण देखने को मिल रहा है। भूतकाल के सभी संतो ने अपने जीवनकाल में विशेष सिद्धि प्राप्त की थी; परंतु उनके इहलोक से लीला संवरण करने पश्चात् लोग उन्हे सर्वथा भूल गए। श्री साई नाथ महाराज के अवतार कार्य से संबंधित जो मुग्धकारी दृश्य दिखाई देता है, वह यही कि श्री बाबा भूतल पर जब अपना लोक जागृति का कार्य कर रहे थे, तब जितने लोग उनके दर्शनाथ शिरडी जया करते थे, उससे हजारों-लाखों गुने अधिक भक्त आज भी शिरडी की

ओर आकर्षित हो रहे है। श्री बाबा के कार्य की छाप भक्तों के अंत:करण मे इतनी मजबूत तथा गहरी पैठी हुई है की सच्चे अर्थो मे श्रद्धालु एवं अनन्य भक्त अपने कर्तव्य-पथ से एक पल भर के लिए भी पदच्युत नही होगा।

रोगो से पीडित लोगों को श्री बाबा औषधि-उपचार से रोगमुक्त करते थे; पर इससे अतिरिक्त वे अन्य स्वस्थ लोगो के आरोग्य के सम्बन्ध में भी पूर्ण सतर्क रहा करते थे। जब गाँव में किसी महामारी के फैलने के लक्षण दिखाई देते थे तो वे तुरंत ही अपनी लीलाओं से सब निवासियों को सचेत रहने का संकेत कर देते थे। स्वयं हाथ में झाडू ले कर वे गाँव में सफाई का कार्य आरम्भ करते थे और इतना करने बावजूद यदि कोई भक्त रोग की लपेट मे आ ही जाता तो उसकी प्राण रक्षा का सारा उत्तरदायित्व स्वयं उठाते थे। सर्व सामान्य लोगों के आरोग्य के सम्बन्ध में श्री बाबा कितने अधिक चिंतित रहा करते थे, यह निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है। महिने में एक दिन श्री बाबा सोनामुखी तथा अन्य औषधियों का मिश्रण कर जुलाब का काढा तैयार करते थे और वहाँ उपस्थित हर एक व्यक्ति को एक-एक प्याला आग्रहपूर्वक पिला कर ऊपर से खाने के लिए चने दिया करते थे। श्री बाबा की इच्छा का कोई भी सहसा अनादर नही करता था; क्योंकि स्वास्थ्य की दृष्टि से श्री बाबा के प्रत्येक कार्य का परिणाम शुभ ही होता था। श्री बाबा का यही दस्तूर अखंड रूप से कितने ही वर्षो तक चलता रहा। पंरतु बाद मे एक दिन एक रोगी को उन्होनें औषधि दी और कुछ पथ्य भी बताया। परंतु रोगी भक्त ने श्री बाबा की आज्ञानुसार आचरण किया और उसकी मृत्यू हो गई। श्री बाबा को उस समय अपार दु:ख हुआ। उन का हृदय मानो चूर-चूर हो गया। इस दुर्घटना से श्री बाबा के मन को इतना आघात पहूँचा कि उसी क्षण से उन्होनें औषधियों का वितरण बिल्कुल बन्द कर दिया और किसी औषधि का भूल से भी मुख से उल्लेख तक नही किया। पर भक्तों के आग्रह

पर श्री साई ने द्वारकामाई मे सदैव प्रज्वलित धूनी से भस्म देना आरम्भ कर दिया। भक्त के लिए यही बाबा का प्रसाद था। उनकी दी हुई विभूति में भी इतना सामर्थ्य होता था कि उससे भक्तों के सब रोग दूर हो जाते थे और उनकी मनोकामनाएँ भी पूर्ण होती थी।